भारतीय राष्ट्रवाद पर पंडित जवाहरलाल नेहरु के विचार

डॉ0 अरविन्द कुमार

एसो0 प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान

वीरभूमि राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, महोबा।

Email- arvindpolitics@gmail.com

राष्ट्र निर्माण एक निरन्तर गति ील प्रक्रिया है, जिसका सम्बन्ध आर्थिक समानता, सामाजिक एकता एवं राजनीतिक सहभागिता से है। इस प्रक्रिया में किसी भी देश की स्वतंत्रता एक महत्वपूर्ण सोपान होता है क्योंकि एक स्वतंत्र राश्ट्र ही अपनी इच्छानुसार देश के आर्थिक विकास, सामाजिक एकता बनाने का प्रयास एवं अधिकाधिक राजनीतिक सहभागिता स्थापित करने का कार्य कुशलतापूर्वक कर सकता है। अतः राष्ट्र निर्माण की प्रथम सीढ़ी किसी भी देश की स्वतंत्रता प्राप्ति ही होती है। भारत ही नहीं वरन् एशिया एवम् अफ्रीकी देशों के सन्दर्भ में यह बात बहुत हद तक सत्य दिख पड़ती है। इन देशों में राष्ट्र निर्माण की लहर स्वतंत्रता प्राप्ति से प्रारम्भ हुई और यह निरन्तर प्रगति के मार्ग पर चल रही है। चूंकि इन देशों का उपनिवेशवादी शक्तियों द्वारा कई वर्ष तक शोषण हुआ था। इसलिए यहाँ सामाजिक–आर्थिक विषमता, सामाजिक विघटन एवं राजनीतिक उदासीनता विद्यमान थी। ये सभी चीजें इन देशों को स्वतंत्रता के बाद विरासत में मिली। अतः इन देशों में राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया आज भी एक जटिल समस्या बनी हुई है, एवम् वर्तमान मु कल दौर से गुजर रही है। इस निर्माण प्रक्रिया में सूझबूझ वाले राजनीतिक नेताओं एवं देशप्रेमियों की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है, जो अपने देश के राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में उचित मार्गदर्शन कर सके। यदि ऐसे नेताओं का अभाव होता है तो यह राष्ट्रप्रेम, इतिहास साक्षी है कि फॉसीवाद एवं नॉजीवाद का रुप धारण कर लेता है, और ऐसे सेनानायकों और नेताओं को जन्म देता है जो धर्म, राष्ट्र एवं विकास के नाम पर राष्ट्रप्रेम की भावना के नकारात्मक पहलूओं का प्रयोग कर अपनी सत्ता को निरंकू ा तानाशाही में परिवर्तित कर देते हैं। इसकी मि ाल भारत के पड़ोसी देश एवं पश्चिम एशिया के अधिकांश देशों में देखा जा सकता है। वि व के अन्य दे ाों के साथ ही भारत को स्वतंत्रता द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद प्राप्त हुई, उसी समय विश्व के अधिकां ा राष्ट्र भी स्वतंत्र हुए।

भारत आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से इसने विश्व में एक अलग पहचान बना ली है, जबकि इसके साथ ही अन्य स्वतंत्र होने वाले राष्ट्र कई ऐसी समस्याओं का शिकार हो गये हैं जिनका वे निदान आज तक नहीं कर पाए हैं।

हालांकि भारत भी धार्मिक उन्माद एवं कई अन्य सामाजिक समस्याओं का शिकार रहा है, फिर भी वह निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। इसके पिछे अवश्य ही उन ख्यातिप्राप्त राष्ट्रनेताओं रविन्द्र नाथ टैगोर, रानाडे, गोखले, गॉधी इत्यादि की कुर्बानियां हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया एवं अपने स्वच्छ विचारों के आधार पर राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ की जो निरन्तर प्रगति पर है।

इन महान नेताओं में पंडित जवाहरलाल नेहरु का नाम अग्र पंक्ति में है। स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान अत्यधिक सराहनीय रहा है एवं स्वतंत्रता के बाद दे ा को प्रगति के मार्ग पर ले जाने का श्रेय उन्हीं हो है। उन्होंने इसके लिए जो बिन्दु निर्धारित किये उसमें शांति, समरसता, समानता, एकता एवं अपनत्व आदि महत्वपूर्ण बिन्दू थे। नेहरु राष्ट्रवाद को किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए एक आवश्यक तत्व मानते थे। परन्तु उनका राष्ट्रवाद हिन्दुस्तानी राष्ट्रवाद था जो 'विविधता में एकता' व वि वबन्धुत्व और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना पर आधारित था। इनका राष्ट्रवाद स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, विपिनचन्द्र पाल और अरविन्द घोष के राष्ट्रवाद से अलग तथा टैगोर, रानाडे, गॉधी व अम्बेडकर के राश्ट्रवाद के कुछ हद तक करीब प्रतीत होता है। उनका मानना है कि इन महान व्यक्तियों (स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, विपिनचन्द्र पाल व अरविन्द घोष) द्वारा दी गई राष्ट्रवाद की धारणा भारतीय समाज के लिए उचित नहीं है, क्योंकि इससे उस भारत का निर्माण नहीं हो पायेगा जिसमें सभी वर्गों व धर्मावलम्बियों को राष्ट्रवाद की भावना से जोड़ा जा सके। और ऐसा न होने से भारतीय राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होगी। 1936 में लखनऊ कांग्रेस में उन्होंने अपनी इस भावना को व्यक्त करते हुए कहा कि, ये बड़ी अजीब बात है कि इस देश के हिन्दू, मुसलमान राजनीति में भी साम्प्रदायिक प्रतिक्रियावादी हैं जो भारत के लिए किसी भी रुप में वरेण्य व श्रेयस्कर नहीं है।

भारत में एक ऐसे राष्ट्रवाद को पनपना चाहिए जिसका आधार धर्म या विशेष वर्ग न होकर भारतीयता हो। नेहरु मुसोलिनी और हिटलर के राष्ट्रवादी भावना के भी विरोधी थे। उनका मानना था कि इस प्रकार के राष्ट्रवाद से संसार को सदा ही हानि होती है। अतः राष्ट्रवाद् एवं अंतर्राष्ट्रवाद् में एक अटूट बंधन होना चाहिए। उग्रराष्ट्रवाद् वि वबन्धुत्व व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के विपरित है। अतः भारत में इस प्रकार के राष्ट्रवाद् की आवश्यकता नहीं है जो विश्व जनमानस को विनाश के मार्ग पर ले जाये। इसी प्रकार नेहरु जब भारतीय समाज की कल्पना करते हैं तो महात्मा गांधी के बहुत निकट पहुंच जाते हैं।

समाज में विद्यमान ऊँच–नीच की भावना का विरोध करते हैं और एक ऐसे समाज के निर्माण की कल्पना करते हैं जिसकी बुनियाद समानता, समरसता, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय पर आधारित हो। इस तरह से वे नैतिक समाजवादी के रुप में परिलक्षित होते हैं। आज नेहरु के इन्हीं विचारों की देन है कि, भारतीय समाज में सभी वर्गों को एक सूत्र में समाहित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है और भारत के संविधान में वर्णित उद्देश्य, सामाजिक न्याय उपलब्धि के मार्ग पर भारत धीरे–धीरे अग्रसर है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के सामने सबसे बिकट समस्या आर्थिक संकट थी। देश विभाजन ने जहां धार्मिक उन्माद का बीज बोया था वहीं भारत की आर्थिक बुनियाद को हिलाकर रख दिया। लूट–खसोट का दौर चल रहा था और भारत एक विकट आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था। ऐसी स्थिति में देश के लिए एक ऐसी नियोजित आर्थिक नीति की बुनियाद डालनी थी जिससे देश के तात्कालिक आर्थिक समस्याओं का समाधान हो सके और देश को आर्थिक रुप से गिरवी रखने से बचाया जा सके। साथ ही साथ देश में निजी कल–कारखाने स्थापित हों, और उन्हें पनपने का पर्याप्त अवसर मिल सके। देश के आर्थिक स्रोतों का उचित दोहन् एवम् समान वितरण हो और उनका लाभ किसी व्यक्ति अथवा वर्ग विशेश को न मिलकर इसमें सबकी समान भागीदारी हों, जिससे कि समाज में आर्थिक रूप से व्याप्त खाई व उससे जन्में भोशण को समाप्त किया जा सके। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही नेहरू ने भारत के लिए 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' की नीति को अपनाया जिसके चलते भारतीय समाज की जरुरतों अनुरूप अर्थव्यवस्था स्थापित हो सकी जो 1990 तक भारत की आर्थिक प्रगति का आधार बनी रही। 1990 के पश्चात् जब भारत ने 'वैश्विक अर्थव्यवस्था' में बदलाव के कारण 'उदारवादी

अर्थव्यवस्था' का अनुसरण किया तो नेहरू द्वारा स्थापित 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' ने उसके लिए एक ऐसे आधार का काम किया है जिससे वह वर्तमान अंतर्राश्ट्रीय बाजार में अपनी साख व सम्मान को बचाये रख सका है। राश्ट्रनिर्माण की प्रकिया में किसी भी देश के लिए अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रखना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। क्योंकि इसके द्वारा ही कोई राश्ट्र अपनी आंतरिक व वाह्य सुरक्षा तथा विश्व राजनीति में अपना स्थान सुनिश्चित् करता है और अपनी इच्छानुसार विकास के मार्ग पर चल पाता है। भारत ने जब स्वतन्त्रता प्राप्त की उस समय विश्व राजनीति दो गुटों में बँटी थी। दोनों गुटों की तरफ से लुभावन आकर्शण द्वारा अपने–अपने गुटों में शामिल करने का प्रयास किया जा रहा था।

भारत की राजनीतिक एवम् आर्थिक स्थिति कुछ इस प्रकार बिगड़ी हुई थी कि अधिकतर भारतीय राजनेता किसी एक गुट में शामिल होकर समस्याओं का समाधान निकालना चाहते थे। परन्तु ऐसी स्थिति में भी नेहरू किसी गुट में शामिल होकर देश की स्वतन्त्रता को गिरवी रखना स्वीकार न करके भारत के लिए एक नवीन अंतर्राश्ट्रीय नीति 'असंलग्नता की नीति' को अपनाना उचित समझा। तत्कालीन दौर में असंलग्नता की नीति पर प्र नचिन्ह उठने पर नेहरु ने 'असंलग्नता की नीति' का स्पश्ट करते हुए कहा कि, विश्व की गुटबंदी से दूर रहकर विश्व शांति एवम् न्याय के लिए प्रयास करना तथा एक स्वतन्त्र नीति का अनुसरण करना। नेहरू की इस भावना के साथ विश्व के अनेकों राश्ट्र एकजुट हो गये। फलस्वरूप एक तृतीय विश्व शक्ति का अविर्भाव हुआ जिसके मंच से विकासशील देशों की आवाज सुनी जाने लगी। यद्यपि इस आंदोलन की अमेरिका एवम् रूस दोनों देशों के द्वारा आलोचना की गई और इसे 'अनैतिक', 'भिखमंगों का समुह' तथा अव्यवहारिक बताया गया। परन्तु नेहरू के व्यक्तित्व ने भारत को इस आंदोलन द्वारा विश्व राजनीति में वह सम्मान दिलाया जिसके फलस्वरूप तमाम बाधाओं के बावजुद भारत एक स्वतन्त्र अंतर्राश्ट्रीय नीति का पालन कर सका। आज द्विध्रुवीय विश्व राजनीति समाप्त हो गई है, और असंलग्नता आंदोलन की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाये जा रहे है। परन्तु शान्ति स्थापित करने, पिछड़े देशों की आवाज को विश्व राजनीति के मंच तक पहुचाने एवम् स्वतन्त्र राजनीति अपनाने में आज भी यह आंदोलन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्व आर्थिक असमानता के उन्मुलन में इस आंदोलन की भुमिका अत्यन्त सराहनीय रहा है। आज प्रश्न यह नहीं है कि असंलग्नता की नीति प्रासंगिक है या नही, वरन् यह है कि इस नीति का उपयोग किस सीमा तक किया जाये और भारत उसमें अपनी भुमिका किस तरह निभाये। विश्व आज सैनिक गुटों में विभाजित नहीं है परन्तु आर्थिक गुटबंदी आज भी विद्यमान् है। ऐसी स्थिति में यह बहुत ही महत्वपुर्ण हो जाता है कि विकासशील देशों के आर्थिक स्रोत के दोहन को कैसे रोका जाये? अतः इस संदर्भ में असंलग्नता की नीति एक उचित माध्यम का कार्य कर सकती है। बदलते हुए वै ि वक परिदृ य में जहां वि व बहुध्रुवीय भाक्ल अख्तियार कर चुका है तथा आतंकवाद, अ ि ाक्षा गरीबी, भूखमरी इत्यादि समस्याएं बढ़ती जा रही हैं, असंलग्नता की नीति में परिवर्धन करते हुए अपनी भूमिका को सक्रिय तथा प्रभाव ाली बनाना होगा।

भारतीय विदेश नीति पर जब भी चर्चा होती है तो कश्मीर, तिब्बत एवम् चीन के प्रश्न पर और भारत की सुरक्षा परिशद् में स्थायी सदस्यता के मुद्दे पर नेहरू की काफी आलोचना की जाती है, तथा इस मामले उइाये गये उनके कदम हेतु उन्हे गुनहगार ठहराया जाता है।

परन्तु जो भी व्यक्ति उस समय के भारत की सामाजिक, आर्थिक एवम् राजनीतिक स्थिति से अवगत् है वह इस प्रकार की बहस से स्वयं को दूर ही रखता है और उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के संदर्भ में नेहरू द्वारा उठाये गये कदम एवम् प्रयासों को उचित व श्रेयस्कर ही मानता है, आज जब इजराइल–फिलिस्तीन संघर्श के साथ ही इजराइल और ईरान संघर्श में अमेरिका एवं अन्य प ि चमी दे ाों और इसके विपरीत रुस, चीन, उत्तर कोरिया व अन्य मुस्लिम राश्ट्रों के गूट ने

वि व को पुनः अराजक स्थिति में ला दिया है। इसके साथ ही रुस और यूक्रेन संघर्श ने वि व समाज में एक अलग ही चुनौती प्रस्तुत कर दिया है जिसने अंतर्राश्ट्रीय व्यापार को अत्यंत जटील बना दिया है उक्त संघर्शों ने अधिसंख्य परिवारों को एक दे ा से दूसरे दे ा में पलायन को बाध्य कर दिया है, जिसने कि वै वक स्तर पर लोगों के मानवाधिकारों को क्षति पहुंचाया है। अतः ऐसी स्थिति में नेहरु और उनकी असंलग्नता की नीति भूमिका अति–महत्त्वपूर्ण हो जाती है। नेहरू अंतर्राश्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में शांति के पक्षधर थे एवम् 'साध्य' और 'साधन' दोनों की पवित्रता में विश्वास करते थे। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि् नहीं था कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वे राश्ट्रीय हितों की अनदेखी करते। राश्ट्रीय हित उनके लिए सर्वोप्परि था। 1950 में भारतीय संसद में उन्होने स्वयं कहा था कि, नैतिकता हमें अच्छी लगती है, परन्तु राश्ट्रीय हित के संदर्भ में इसे उसी सीमा तक उपयोग किया जा सकता है जहां तक राश्ट्रीय हित को कोई हानि न पहुंचे। इसी आशय को उन्होने बहुत पहले 4 दिसम्बर, 1947 को संविधान सभा में इसप्रकार व्यक्त किया है कि, कोई भी सरकार नीतियों के निर्माण में ऐसा कोई कार्य नहीं कर सकती जो देश के लिए अहितकर हो। अतः नेहरू देश की स्वतन्त्रता, सम्मान एवम् सुरक्षा हेतु आजीवन तत्पर रहे। उनके द्वारा अपनाये गये समाजवाद, धर्म–निरपेक्षतावाद, सामाजिक लोक–कल्याण और अंतर्राश्ट्रीयतावाद संबंधी विचार अति–महत्वपूर्ण हैं, जिनके आधार पर नेहरू ने वर्तमान भारत की नींव रखी। उनके योगदानों के लिए भारत सदैव ऋणी रहेगा।

संदर्भ सूची :–

1. मर्तीशिन, ओ. वी ; *'जवाहरलाल नेहरू और उनके राजनीतिक विचार,'* राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस,जयपुर,1990.
2. कपुर, सुशील;(संकलित) *'विश्व के महान भाशण'*, भाग–1,प्रभात पेपरबैक्स,नई दिल्ली, 2012.
3. **नेहरु, जवाहरलाल;** वि व इतिहास की झलक, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2010।
4. विस्वाल, तपन; अंतर्राश्ट्रीय सम्बन्ध, ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 2022।
5. द्रेज़ ज्यां; झोला वाला अर्थ ाास्त्र, वाणी प्रका ान, नई दिल्ली, 2020।
6. राजन, रघुराम जी0 एवं रोहित लाम्बा; *ब्रेकिंग द मोल्ड,* पेंगुइन रैण्डम हाउस, इण्डिया, 2023।
7. Deepak, J. Sai; *India that is Bharat*, Bloomsbury India,New Delhi, 2021.
8. Rajan, Raghuram, G; *Saving Capitalism from the Capitalists*, Harper Collins Publishers, Gurugram, 2018.
9. Munshi, Surendra (edit.); *Democracy Under Threat*, Oxford University Press, 2017.
10. Thaper, Romila; *Voices of Dissent*, Seagull Books,New Delhi, 2020.
11. Rajan, Raghuram,G; *The Third Pillars*, Harper Collins Publishers, Gurugram, 2020.
12. Bhatia, Rahul; *The Identity Project: The Unmaking of A Democracy*, Context an Imprint of Westland books, Chennai, 2024.
13. Deepak, J. Sai; *India, Bharat and Pakistan: The Constitutional journey a Sandwiched Civilisation*, Bloomsbury India, New Delhi,2022.
14. *Jawaharlal Nehru`s Speeches*, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India, New Delhi, 1970.
15. Appadorai,A and Rajan,M.S., *India's Foreign Policy and Relations,* New Delhi, South Asian Publishers, 1985.
16. Dixit, J.N., *Indo-Pakistan Relations (In War and Peace)*, New Delhi, Prabhat Prakashan, 2004.
17. Guha,Ramchandra; '*India After Gandhi:The History of the world`s Largest Democracy'* Picador India, London, 2008.
18. Harse, Rajen; '*Reflections on Nation Building: A Gypsy in the World of Ideas*' Pentagon Press,New Delhi,2011.
19. Habib, S. Irfan(edt.); *Indian Nationalism (the Essential Writings)*, Aleph Book Company,New Delhi, 2017.
20. Puniyani Ram; *Indian Nationalism Versus Hindu Nationalism*, Pharos Media& Publishing Pvt.Ltd, New Delhi, 2019.